प्रश्न:- कबीर काव्य की विशेषताएँ -अथवा कबीर काव्य का भाव पक्ष स्पष्ट कीजिए।

कबीर दास संत काव्य के श्रेष्ठ कवि एवं संतमत के प्रवर्तक है। कबीर वाणी के डिक्टेटर थे। उनकी जन्मतिथि के सम्बन्ध में कई मत प्रचलित है- डॉ. श्यामसुन्दर दास और आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने इनका जन्म सम्वत् 1456 वि. (सन्1389 ई.) माना है। कहा जाता है कि कबीर काशी की एक ब्राह्मणी विधवा की सन्तान थे। समाज के डर से ब्राह्मणी ने नवजात पुत्र को एक तालाब के किनारे छोड दिया जहां से नीरू -नीमा जुलाहे दम्पत्ति उन्हें अपने घर ले आए।

इनका अवसान मगहर में सम्वत् 1575 वि.(सन् 1518 ई.) में हुआ है।यह भी किंवदंती है कि हिन्दू मुस्लिम दोनों उनके अंतिम संस्कार को अपने ढंग से करने के लिए लड़ने लगे। चंद्रधर हटाने पर उनके पार्थिव शरीर के स्थान पर कुछ फूल मिले जिन्हें उन्होंने आपस में बांट लिया।

इनकी रचनाओं को इनके शिष्यों ने बीजक नामक ग्रन्थ में संकलित किया है जिसके तीन भाग हैं - साखी, सबद और रमैनी। साखी में संग्रहित साखियों की संख्या 809 है। सबद के अन्तर्गत 350 पद संकलित है। साखी शब्द का प्रयोग कबीर ने संसार की समस्याओं को सुलझाने के लिए किया है। इनका साहित्य मानवतावाद का पोषक है।

कबीर काव्य की विशेषताएँ----

1. जनसामान्य में एकता की स्वीकृति-

भक्ति आन्दोलन में सभी धर्मों, जातियों , वर्गों के मध्य वैचारिक और व्यावहारिक एकता को स्वीकार किया गया और विभाजित मानवता की समानता को नैतिक और मजबूत आधार प्रदान किया। रामानन्द की शिष्य परम्परा में कबीर, रैदास, दादू, तुकाराम तथा तुलसी हैं वहीं मीरा ने अपने गुरू के रूप में रैदास को स्वीकार किया। कबीर भी कहते हैं-

"ना मैं हिन्दू ना मुसलमान"

तुलसी भील-भीलनी, किरात जैसी जंगली जातियों को राम के द्वारा स्वीकृत व सम्मानित करवाते हैं। संतों ने आत्मा - परमात्मा में अंश अंशी भाव मानते हुए उनमें अभेद की स्थिति मानी है। इसी आधार पर उन्होंने जाति, धर्म, वर्ग को आधार बनाकर ईश्वर उपासना पर सबके अधिकार को स्वीकार किया। निर्गुण सगुण दोनों ने ईश्वर के समक्ष मानव मात्र की समानता को एक स्वर से स्वीकारा।

2.जाति-प्रथा का विरोध-

'जाति प्रथा' के नाम पर एक बड़े वर्ग को समाज से अलग कर दिया गया था। 'अछूत', 'शूद्र', 'अन्त्यज', 'निम्नतम' श्रेणी के मनुष्यों को मनुष्यत्व की मूलभूत पहचान भी प्राप्त नहीं थी। ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य वर्ग में भी जातिगत श्रेष्ठता और सामाजिक व्यवस्था में उच्च श्रेणी के लिए संघर्ष होते रहते थे।

संतों ने इस से मुक्ति के लिए लड़ाई लड़ी।

कबीर -

"ना हिन्दू ना मुसलमान"

(जाति विशेष के विशिष्ट अधिकारों पर चोट)

इन सबने जाति' और 'धर्म' से उत्पन्न मानवीय विषमताओं को दूर कर जीवन मूल्यों को पुनः प्रतिष्ठित करने के लिए कहा।

जाति प्रथा के आधार पर ईश्वरीय उपासना का जो विशेषाधिकार ऊंची जाति ने अपने पास रखा था और पुरोहित तथा क्षत्रियों के साथ मिलकर उसे बलपूर्वक मनवाया जाता था , उसे तोड़ने का प्रयास भी भक्ति आन्दोलन ने किया ।

3. धर्मनिरपेक्षता/पंथनिपेक्षता

धर्मनिरपेक्षता जीवन मूल्य है जिसका अर्थ है अपने धर्म पर निष्ठा रखते हुए भी व्यक्ति दूसरे धर्मों का सम्मान करना तथा अपनी धार्मिक निष्ठा को दसूरे धर्मों में निष्ठा रखने वालों से जोड़ने में बाधा न बनना। कबीर ने इस विचारधारा को जन-जन तक पहुंचाया। उनका दृढ़ मत था कि यह पथ सहज नहीं है अतः जिसमें अपना 'सर' काटकर रखने और अपना घर फूंकने की क्षमता हो वही इस धर्मनिरपेक्ष विचारधारा के साथ चल सकता है।

"कबीरा खड़ा बाजार में, लिए लुकाठी हाथ।

जो घर जारे आपना, चले हमारे साथ।। "

अंत्यजों और पीड़ित-शोषित वर्गों से संबद्ध इन संतों ने विश्वास से धर्म-जाति और वर्ण-सम्प्रदायगत बन्धनों को तोड़ते हुए मानव धर्म तथा मानव संस्कृति का गान गाया तथा सामाजिक उत्पीड़न और अंधविश्वासों का विरोध किया। कबीर ने कहा कि "यह हमारी नियति नहीं, हमारा शोषण है, मानवता के प्रति अभिशाप है, किसी धर्म में इसका कोई आधार नहीं है।" नियति और धर्म के नाम पर थोपे गए अंधविश्वासों को उन्होंने धर्म और ईश्वर के आधार पर ही खण्डित किया और ज्ञान का प्रकाश प्रकाशित किया। इसी कारण उन्होंने सच्चे गुरू का महत्व प्रतिपादित किया - "आगे थे सतगुर मिल्या, दीया दीपक हाथ।"

सूर और तुलसी ने भी सामाजिक उत्पीड़न के विरुद्ध आवाज उठाई है। तुलसी ने कई जगह तत्कालीन अर्थव्यवस्था का चित्र अंकित किया है तथा सामाजिक जीवन की विषमताओं को रेखांकित किया है।

" धूत कहौ अवधूत कहौ, रजपूत कहौ, जुलहा कहौ कोऊ,

काहू की बेटी सो बेटा न ब्याहब, काहू की जाति बिगारिन सोऊ।

तुलसी सरनाम गलुाम है राम को, जाको रुचै सो कहो कछु कोऊ,

माँग के खइबौ, मसीत को सोइबो, लेबे को एक न देबे को दोऊ।।"

4.भक्ति आराधना का उच्चतम स्वरूप-

भक्त कवियों ने आन्तरिक पवित्रता और सहज भक्ति पर जोर दिया है। वर्गगत, जातिगत भेदभावों तथा धर्म के नाम पर किए जाने वाले उत्पीड़न का दृढ़ विरोध।

5. बाह्याचारों, कर्मकाण्डों आदि की निंदा -

संत कवियों ने बाह्याचारों, कर्मकाण्डों आदि की निंदा करते हुए जीविकोपार्जन के लिए कर्म करते हुए सहज मानवतापूर्ण आचरण को अपनाने व सहज भक्ति पर बल दिया। सामाजिक कुरितियों, तिर्थाटन, मूर्तिपूजा, नमाज, रोजादि का खुलकर विरोध किया | उन्होंने हिन्दुओं को कहा —

" पाहन पूजै हरि मिलै तो मैं पूजूँ पहार |

ताते ये चक्की भली जो पीस खाय संसार || "

दूसरी ओर मुसलमानों से कहा —

" कंकड़ पत्थर जोरि कै मस्जिद दिया बनाय |

ता चढ़ मुल्लाबाग है क्या बहरा हुआ खुदाय || "

तथा

मुसलमान दिन भर रोजा रखता है और रात को गाय की हत्या करता है, उन्हें कबीर ने स्पष्ट कहा है —

" दिन में रोजा रखत है रात हनत हैं गाय |

यह तो खून वो बन्दगी कैसे खुशी खुदाय || ”

उधर तीर्थाटन करने वाले हिन्दुओं पर भी निशाना साधते हुए कहा है —

“ कस्तूरी कुण्डली बसै मृग ढढै बन माही | ”

6. ब्रह्म का स्वरूप- कबीर को मान्यता है कि तीर्थ, व्रत, उपवासादि सब व्यर्थ है, क्योंकि इनके द्वारा ब्रह्म की प्राप्ती असंभव है | उनके अनुसार ब्रह्म का स्वरूप है —

“जाके मुँह माथा नहीं, नाहिं रूप कुरूप |

पुहुप बास थैं पातरा ऐसा तत्र अनूप ||”

कबीर के अनुसार ईश्वर प्राप्ति आत्मज्ञान से ही संभव है-

“आत्मज्ञान बिना सब सूना ज्यों मथुरा क्या कासी |

घर में वसुंधरी नहि सूझै बाहर खोजन जासी ||”

7.परमात्मा आत्मा में अभेद:-

कबीर ने ब्राह्य भेदों को व्यर्थ बताते हुए सबको एक ही परमात्मा की सन्तान बताया और सामान्य भावना का प्रतिपादन किया | अतः भगवान के भक्ती का अधिकार सबको है —

“जात पाँति पूछे न कोई हरि को भजै सो हरि को होई |”

8. संसारिक नश्वरता संबंधित विचार:-

कबीर के अनुसार यह संसार नश्वर है अतः समय रहते मनुष्य को ईश्वर भक्ति में लग जाना चाहिए। यहां वे कर्म करते हुए भक्ति की बात कहते हैं। संसार जीवन क्षणभंगुरता है। कबीर ने कहा —

“रहना नहि देश विराना है,

यह संसार कागद की पुड़िया

बूँद पड़े गल जाना है |”

अपनी मान्यतानुसार ‘ भाव अनूठो चाहिए भाषा कैसेहु होय ’ कबीर का भाव पक्ष अनूठा है।